01 मई, 2017 को श्रीमान गंगाधर गोविन्द पटवर्धन इंग्लिश मीडियम स्कूल, रत्नागिरी में स्वर्गीय बाबूराव जोशी गुरुकुल परियोजना भवन के उद्घाटन समारोह में माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. आज रत्नागिरी एजुकेशन सोसायटी के तत्वावधान में श्रीमान गंगाधर गोविन्द पटवर्धन स्कूल, रत्नागिरी में **स्वर्गीय बाबूराव जोशी गुरुकुल परियोजना भवन** के उद्घाटन के अवसर पर यहाँ आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। स्कूल के रूप में नए भवनों के निर्माण से भारत को शिक्षित करने के काम को आगे बढाने के हमारे संकल्प और प्रतिबद्धता का पता चलता है। मैं स्कूल के प्रबंधकों को विद्या प्रदान करने के लिए उनकी निष्ठा और समर्पण भाव के लिए बधाई देती हूँ।

2. शास्त्रों में कहा गया है:–

''नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुहृत् ।
नास्ति विद्यासमं वित्तं नास्ति विद्यासमं सुखम् ।।''

(अर्थात विद्या जैसा कोई बंधु नहीं और न ही विद्या के समान कोई मित्र है; विद्या के समान कोई धन नहीं और न ही विद्या के समान कोई सुख है।)

3. हमारे जीवन में शिक्षा का यही महत्त्व है। शिक्षा व्यक्ति को अज्ञानता के बंधन से मुक्त करती है। शिक्षा से ही हम भले–बुरे के बीच भेद करना सीखते हैं और मुद्दों को सही नज़रिए से समझते हैं। शिक्षा से ही हमें गहराई और आलोचनात्मक ढंग से सोचने की शक्ति मिलती है। शिक्षा से हमें अपने हितों की अपेक्षा समाज के हितों को वरीयता देने की सीख मिलती है। इसीलिए ऐसे राजा और महाराजा जिनकी शक्ति और सत्ता का कोई सानी नही था, वे भी अपने बच्चों को शिक्षा और ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरुकुल भेजते थे। हमारी पौराणिक कथाओं और इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं।

4. आधुनिक काल में यह बात व्यापक रूप से स्वीकार की जाती है कि शिक्षा और स्वास्थ्य से देश की अर्थव्यवस्था और समाज के कल्याण पर बहुत प्रभाव पड़ता है। ऐसा कहा जाता है कि शिक्षा में निवेश से सबसे अधिक लाभ मिलते हैं। शिक्षा, कौशल विकास, प्रशिक्षण और स्वास्थ्य देखभाल की सुविधाओं के माध्यम से मानव संसाधन विकास में निवेश से कर्मियों की उत्पादकता और लोगों के कल्याण में वृद्धि होती है। इसलिए सभी स्कूलों को इस प्रकार की अच्छी शिक्षा प्रदान करने के प्रयास करने चाहिए जिससे छात्र भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो सकें।

5. स्कूल का उद्देश्य ऐसा होना चाहिए जैसा प्रख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था, "The training of independently thinking and acting individuals, who, however, see in the service of the community, their highest life problems."

6. हमें हमेशा याद रखना चाहिए किः–

"विद्या ददाति विनयं विनयाद याति पात्रताम्।"

अर्थात् शिक्षा से विनय और विनय से व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

स्कूलों का यह प्रयास होना चाहिए कि वे छात्रों में सहनशीलता, एक दूसरे का ध्यान रखने, मिल बाँट कर काम करने, ईमानदारी, सहानुभूति, सत्यनिष्ठा आदि जैसे गुणों का समावेश करें। अधिकारों की शिक्षा देते समय छात्रों को समाज और देश के प्रति उनकी जिम्मेदारियों और किसी को कुछ देने में जो खुशी मिलती है, उसके बारे में भी बताया जाना चाहिए।

7. शिक्षा एक ऐसी चीज है जो हर इंसान के लिए इस तरह महत्वपूर्ण है जिस तरह ऑक्सीजन जीवन के लिए जरूरी है। यह बुद्धि और चेतना के धन से इंसान को मालामाल करती है और जीवन की हकीक़तों से अवगत कराती है। ज्ञान ही मनुष्य को अधिकार की राह की ओर ले जाता है।

8. आजादी मिलने के बाद भारत में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत प्रगति हुई है। वर्ष 1911 में भारत में साक्षरता दर 5.92 प्रतिशत और महिला साक्षरता 1.01 प्रतिशत थी। 1951 में साक्षरता दर 18.33 प्रतिशत थी। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हमारी साक्षरता दर 73 प्रतिशत है और महिला साक्षरता में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है। महिला साक्षरता दर 64.6 प्रतिशत है जो 80.9 प्रतिशत की पुरूष साक्षरता दर से अभी भी कम है किंतु पुरूष साक्षरता में 5.6 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में महिला साक्षरता में 10.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मैं समझती हूं कि इतना ही काफी नहीं है। बालिकाओं की शिक्षा के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है। सरकार, सिविल समाज, मीडिया और अन्य संबंधित व्यक्तियों को समाज की पुरूष प्रधान सोच बदलने, महिलाओं को अपनी निहित क्षमता का पूर्ण उपयोग करने के लिए सशक्त बनाने और उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रयास करने होंगे।

9. हमारे बच्चों के जीवन में स्कूली शिक्षा का समय बहुत खास होता है क्योंकि इस समय जिन संस्कारों के बीज बोये जाते हैं, वह समय आने पर अंकुरित होते हैं और एक बच्चा परिपक्व वयस्क बनता है। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि विद्यालयों स्तर पर ही सही संस्कार दिए जाएँ। इन संस्कारों में सही विचार अर्थात बड़ों का आदर, अपनी संस्कृति का सम्मान, समय की पाबंदी, किताबें पढ़ना, पर्यावरण की देखभाल, स्वास्थ्य और सफाई के प्रति

जागरूकता, सामाजिक संवेदनशीलता और मानवता के गुण आदि शामिल हैं। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, ये विचार एक दृष्टिकोण बन जाते हैं। ऐसा केवल अच्छी शिक्षा से ही संभव है। लेकिन शिक्षा क्या है? **स्वामी विवेकानंद के शब्दों में ' शिक्षा वह जानकारी नहीं है जो हमारे दिमाग में डाली जाती है और जिसे समझे बिना ही हम अपना जीवन बिता दें। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें विचारों के समावेश से मानव निर्माण, चरित्र निर्माण और जीवन निर्माण होता है।' Intelligence plus character is the greatest goal of education.**

10. प्यारे छात्रो, आज आपके लिए अपार अवसर उपलब्ध हैं और हमेशा याद रखिये कि परिश्रम का फल मीठा होता है। इसलिए पूरी लगन से पढ़िए, कड़ी मेहनत कीजिये, अपनी समस्याओं के बारे में अध्यापकों के साथ चर्चा करिये और पढ़ाई से इतर कार्यकलापों के लिए भी समय निकालिए। आप जो धन एकत्र करेंगे, वह हमेशा आपके पास रहे न रहे लेकिन ज्ञान हमेशा आपके पास रहेगा। उचित ही कहा गया है:

"न चोरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारी ।
व्यये कृते वर्धते एव नित्यं विद्याधनं सर्वधन प्रधानम् ।।"

(कोई चोर इसे चुरा नहीं सकता और न ही राज्यव्यवस्था इसे आपसे छीन सकती है; इसे भाइयों में बांटा भी नहीं जा सकता और न ही यह उठाने में भारी होती है; आप इसे जितना बांटेंगे, यह उतना ही बढ़ती है; व्यक्ति के पास जितनी धन–सम्पति होती है, उनमें विद्या ही सर्वोत्तम धन है।)

11. शिक्षा हमारे समाज की आत्मा है जो कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती है। आप सब इस बात से सहमत होंगे कि स्कूली शिक्षा की नींव जितनी मजबूत होगी, जीवन में बच्चे के समग्र विकास की संभावना भी उतनी ही अधिक होगी। जहाँ शिक्षा में उत्कृष्टता पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए, वहीं हमें इस बात पर भी ध्यान देना है कि शिक्षा का अर्थ कक्षाओं में जाकर अलग-अलग विषयों की शिक्षा ग्रहण करना ही नहीं है , शिक्षा का अर्थ है– व्यक्ति का सर्वांगीण विकास और चरित्र निर्माण। शिक्षा विकास का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। इसे लोगों, विशेष रूप से सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों को सशक्त बनाने का सर्वोत्तम साधन भी माना जाता है।

12. मैं इस बात का उल्लेख करना चाहूंगी कि आप जितनी गंभीरता से अपनी पढ़ाई करेंगे उससे न केवल आपका बल्कि हमारे देश का भविष्य भी उज्ज्वल होगा। **Nelson Mandela ने कहा है कि 'Education is**

the most powerful weapon we can use to change the world.'

13. शिक्षा की गुणवत्ता से ही मानव रुपी पूँजी की गुणवत्ता निर्धारित होती है और स्कूलों में बच्चों की प्रवेश दर बढाकर और सरकारी और निजी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाकर भारत में शिक्षा के प्रसार में सुधार लाने के लिए अभी और अधिक प्रयास करने की जरूरत है।

14. योग्य अध्यापकों के प्रतिशत को बढाने और योग्यता प्राप्त और कम योग्यता प्राप्त अध्यापकों को प्रशिक्षित किए जाने की जरूरत है। आज जब विश्व ज्ञान आधारित समाज की दिशा में अग्रसर हो रहा है तो ऐसे में अध्यापकों के लिए भी यह जरूरी हो जाता है कि वे अपने आपको परिस्थितियों के अनुरूप ढालें और अपनी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा से निभाएं।

15. सरकार शिक्षा प्रणाली को सबके लिए सुलभ बनाने के लिए पूरी ईमानदारी से प्रयास कर रही है। सरकार ने अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछडे वर्गों के साथ साथ अल्पसंख्यकों और आर्थिक रूप से पिछडे अन्य वर्गों जैसे सुविधाओं से वंचित,

कमजोर और उपेक्षित वर्गों के लोगों को शिक्षा प्रदान करने के लिए अनेक योजनायें और कार्यक्रम शुरू किए हैं। लड़कियों की शिक्षा पर बहुत जोर दिया जा रहा है और **'बेटी बचाओ, बेटी पढाओ'** इसी दिशा में चलाया जा रहा महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। विभिन्न ग्रुपों के लिए स्कूल में दाखिला लेने और पढ़ाई जारी रखने को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक छात्रवृत्ति योजनायें हैं। सीधे लाभ पहुंचाने के तरीके के अंतर्गत विभिन्न मंत्रालयों/विभागों द्वारा चलाई जा रही विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति योजनाओं (जैसे पहली से दसवीं कक्षा के लिए मैट्रिक–पूर्व, ग्यारहवीं से पी एच डी तक मैट्रिक पश्चात और तकनीकी और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए योग्यता और साधनों के आधार पर छात्रवृत्ति) के लिए एक एकल प्रणाली, राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल शुरू किया गया है। मैं अध्यापकों से अनुरोध करती हूँ कि वे इन विभिन्न छात्रवृत्तियों के बारे में छात्रों और उनके माता–पिता को पूरी जानकारी दें और उनका मार्गदर्शन भी करें।

16. **सही शिक्षा मनुष्य को अलंकृत करती है। आपको इस विद्यालय के परिसर में श्रेष्ठ वातावरण एवं गुरुजनों का सान्निध्य है। इसका लाभ उठाएं, एवं जिज्ञासु विद्यार्थी बने; विभिन्न विषयों की अवधारणा को स्पष्ट करें और जीवन में सफलता हासिल करें। अपने लक्ष्य से विचलित ना हों। माता–पिता शिक्षा की व्यवस्था करते हैं। गुरुजन हमें पढ़ाएंगे, पर आपकी**

लगन और एकाग्रता ही आपको आगे ले जाएगी। अंग्रेजी में एक कहावत है – 'Teachers open the door, but you must enter by yourself'.

17. अपनी बात समाप्त करने से पहले मैं एक बार फिर श्रीमान गंगाधर गोविन्द पटवर्धन स्कूल, रत्नागिरी के प्रबंधकों को धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने मुझे आज इस समारोह में आमंत्रित किया। आज अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस है, इसलिए मैं आज के दिन देश के सभी कामकाजी पुरुषों और महिलाओं को राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान के लिए बधाई देती हूँ।

धन्यवाद।

———